بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-17.11.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन तथा ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

मध्यपूर्व ऐशिया में युद्ध के कारण पुनः विशेष दुआओं की प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 17 नवम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- गत ख़ुत्बः के अन्त में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के सम्बंध में जो इतिहास बयान हो रहा था उसमें फ़रात बिन हय्यान के क़बूले इस्लाम का वर्णन हुआ था, उसका विस्तृत वर्णन यह है कि वह गिरफ़तार होकर बन्दियों में था। बदर के युद्ध वाले दिन भी उसको घाव लगे थे परन्तु किसी तरह क़ैद से भाग निकला था। हज़रत अबू बकर रज़ी. उसे देखते ही कहने लगे कि अब तो अपनी गतिविधियों को बदलो और मुसलमान हो जाओ। इस पर वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर चल पड़ा तथा एक अन्सारी दोस्त के पास से निकलते हुए कहने लगा कि मैं मुसलमान हूँ। उस अन्सारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहा कि इसने इस्लाम क़बूल कर लिया है। आप स. ने फ़रमाया कि अब यदि यह कहता है कि इसन इस्लाम क़बूल कर लिया है तो फिर यह इसका और अल्लाह का मामला है तथा इसी बात पर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे रिहा कर दिया।

घटना क्रम में एक वर्णन सिरिय्या ज़ैद बिन हारसा रज़ी. का है जो जमादिल आख़िर 3 हिजरी में क़ज़दा नामक स्थान पर भेजा गया था। इस घटना को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने यूँ लिखा है कि बनू सलीम तथा बनू ग़तफ़ान के हमलों से कुछ राहत मिली तो मुसलमानों को एक और आशंका की रोक थाम के लिए वतन से निकलना पड़ा। अब तक क़ुरैश अपने व्यापार के लिए हिजाज़ के तटीय मार्ग से शाम देश की ओर जाते थे किन्तु उन्होंने यह रास्ता अब छोड़ दिया क्यूँकि उन क्षेत्रों के क़बीले मुसलमानों के मित्र बन चुके थे इस लिए उन्होंने नजदी रास्ता चुन लिया जा इराक़ देश को जाता था तथा जिसके आस पास मुसलमानों के घोर शत्रु क़बीले सलीम व ग़तफ़ान नामक आबाद थे। अतएव जमादिल आख़िर के महीने में आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को सूचना मिली कि क़ुरैश का एक दल नजदी रास्ते से होकर जान वाला है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूचना के मिलते ही ज़ैद बिन हारसा रज़ी. की सरदारी में अपने सहाबियों का एक दल रवाना फ़रमा दिया। ज़ैद रज़ी. ने अत्यंत कुशलता से अपने कर्त्तव्य का पालन किया तथा नजद के क़ज़दा नामक स्थान में उनको जा दबाया। इस सहसा हमले से घबरा कर क़ुरैश के लोग धन सम्पदा को छोड़ कर भाग गए। ज़ैद बिन हारसा रज़ी. तथा उनके साथी बड़ी मात्रा में माले ग़नीमत (युद्ध में विजय से प्राप्त धन सम्पत्ति) के साथ सफलता पूर्वक मदीना आ गए।

एक घटना कअब बिन अशरफ़ की हत्या की है जो मदीने के सरदारों में से था तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समझौते में शामिल था। बाद में उसने फ़ितना फैलाने का प्रयास किया जिसके बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी हत्या करन का आदेश दिया। बुख़ारी में उल्लिखित है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कअब से कौन निमटेगा? उसने अल्लाह तथा उसके रसूल स. को अति कष्ट दिया है। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. खड़े हुए और कहा कि मैं उसे मार डालूँगा। वे एक बहाना बनाकर कअब के पास आए तथा कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमसे चन्दा मांगते हैं तथा हमें कठिनाई में डाल दिया है, मैं तुम्हारे पास आया हूँ कि तुमसे उधार लं। कअब ने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब तुम उस व्यक्ति से निराश होकर उसे छोड़ दोगे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. ने कहा कि हमने उसका अनुसरण करना स्वीकार कर लिया है इस लिए हम उसे नहीं छोड़ सकते। कअब ने कहा कि फिर अपनी महिलाएँ अथवा बेटे मेरे पास रहन रख दो। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. ने कहा कि यह तो असम्भव है परन्तु हम अपने युद्ध कवच रहन के रूप में रख सकते हैं। इस पर कअब तय्यार हो गया। जब रात हुई तो ये वापस कअब के मकान पर पहुंचे तथा उसे उसके घर से निकाला तथा बड़ी फुरती के साथ उसको पकड़ कर मार डाला।

इसका और अधिक विवरण शरह बुख़ारी अमदतल क़ारी में यह है कि मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ी. ने अपने साथियों के साथ जब कअब पर हमला किया तथा उसकी हत्या कर दी तो उनके एक साथी हज़रत हारिस बिन औस को तलवार की नोक लगी तथा उसका घाव लग गया। अपने साथियों की तलवार की नोक से घाव लगा था। अतः आपके साथी उन्हें उठा कर तेज़ी से मदीने पहुंचे और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हारिस बिन औस के घाव पर अपने मुंह को लार लगाइं तथा इसके बाद उन्हें कोई पीड़ा न रही।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. लिखते हैं कि कअब के वध की ख़बर फैल गई तो यहूदियों के दल ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिकायत की, कि हमारा सरदार इस तरह मार दिया गया है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने संक्षेप में उनको कअब का वादा तोड़ना, युद्ध के लिए उकसाना, उपद्रव मचाना, अपशब्दों का उपयोग तथा अपने बारे में हत्या का षड्यन्त्र इत्यादि याद दिलाया जिस पर ये लोग डर कर चुप हो गए तथा उनकी सहमति के साथ आगे के लिए एक नया समझौता लिखा गया। यहूदियों ने फ़ितना व फ़साद के तरीक़ों से बचने का नए सिरे से वादा किया।

इतिहास में किसी स्थान पर नहीं लिखा कि इसके बाद यहूदियों ने कभी कअब बिन अशरफ़ के वध का वर्णन करके मुसलमानों पर आरोप लगाया हो, क्यूँकि उनके दिल अनुभव करते थे कि कअब ने अपने उचित दंड को पाया है।

कुछ इतिहासकार आपत्ति करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अनुचित हत्या करवाई, परन्तु स्पष्ट हो कि यह अनुचित हत्या नहीं थी क्यूँकि कअब बिन अशरफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नियमानुसार शांति का समझौता कर चुका था तथा मुसलमानों के विरुद्ध काररवाई करना तो एक तरफ़ रहा, उसने इस बात का वादा किया था कि वह बाहरी शत्रुओं के विरुद्ध मुसलमानों की सहायता करेगा तथा मुसलमानों के साथ मैत्री सम्बंध रखेगा, परन्तु उसने मुसलमानों से धोखा किया तथा मदीने में फ़ितना व फ़साद का बीज बोकर युद्ध की आग भड़काने का प्रयत्न किया तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या की योजना बनाई। उसके अपराध इतने अधिक थे कि उसके विरुद्ध यह दंड देने का आदेश दिया गया। अतः आजकल के सभ्य कहलाने वाले देशों में विद्रोह, सन्धि विच्छेद, युद्ध के लिए भड़काना तथा षड्यन्त्र रचने वाले दाषियों को दंड दिया जाता है तो फिर आपत्ति किस बात की? फिर आज फ़लिस्तीन तथा इसराईल के बीच इससे भी बढ़ कर हो रहा है जो किसो भो दृष्टि कोण से उचित नहीं।

दूसरा सवाल गुप्त रूप से उसकी हत्या की रीति है। अरब में उस समय हर एक व्यक्ति एवं क़बीला स्वतंत्र तथा आत्मनिभर था, ऐसी अवस्था में वह कौनसी अदालत थी जहाँ कअब के विरुद्ध मुक़दमा चला कर नियमानुसार हत्या का आदेश लिया जाता? समझौते के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दिया गया था कि समस्त मतभेदों एवं राजनीतिक गतिविधियां में जो निर्णय उचित समझें, जारी फ़रमाएँ। अतः यदि आप स. ने देश की शांति एवं हित में कअब के फ़ितना फैलाने के कारण उसे हत्या का अधिकारी घोषित किया तो किसी को क्या अधिकार है कि आप स. के निर्णय पर पुनः विचार याचिका का न्यायालय बन कर बैठे, विशेषतः जबकि इतिहास से साबित है कि स्वयं यहूदियों ने कअब के इस दंड को उसके दोषों के प्रकाश में उचित समझ कर चुप्पी साध ली तथा इस पर आपत्ति नहीं की।

हुज़ूर ने फ़रमाया- इस अवधि में हज़रत हफ़सा रज़ी. की दूसरी शादी भी हुई जो हज़रत उमर रज़ी. की सुपुत्री थीं। वे एक निष्ठावान सहाबी ख़नीस बिन हज़ाफ़ा रज़ी. के निकाह में थीं जो बदर की लड़ाई से वापस आकर एक बीमारी में लिप्त हो गए तथा स्वस्थ न हो सके आर वफ़ात पा गए। हज़रत हफ़सा रज़ी. के पति के देहान्त पर शोक के कारण जो उनको पहुंचा था तथा हज़रत उमर रज़ी. से सम्बंधों को सुदृढ़ बनाने तथा हज़रत हफ़सा रज़ी. के लिखने पढ़ने की प्रतिभा के कारण दावत, तबलीग़ एवं शिक्षा का काम विस्तृत स्तर पर करने की नीति से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शअबान 3 हिजरी में उनसे निकाह फ़रमाया। हज़रत हफ़सा रज़ी. का देहान्त लगभग तरेसठ वर्ष की आयु में 45 हिजरी में हुआ।

2 हिजरी की घटनाओं में हज़रत अली रज़ी. तथा हज़रत फ़ातमा रज़ी. के निकाह का वर्णन हो चुका है। उनके हां रमज़ान तीन हिजरी म अर्थात निकाह के दस महीने बाद एक बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हसन रज़ी. रखा और जिनके विषय में एक बार आप स. ने फ़रमाया कि मेरा

यह बच्चा सय्यद अर्थात सरदार है तथा एक समय आएगा कि ख़ुदा इसके द्वारा मुसलमानों के दो गुटों में सन्धि कराएगा, अतः अपने समय पर यह भविष्य वाणी पूरी हुई।

हुज़ूरे अनवर ने ख़ुत्बः के अन्त में फ़लिस्तीन के मुसलमानों के लिए पुनः दुआ की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया-

जैसा कि मैं कई ख़ुत्बों से फ़लिस्तीनियों के लिए दुआ का वर्णन कर रहा हूँ, आज भी उसी के बारे में कहना चाहता हूँ कि दुआएँ जारी रखें, अब तो अत्याचार अपने चरम सीमा पर पहुंच चुका है। हम्मास से युद्ध के बहाने से निर्दोष बच्चों, महिलाओं, बूढ़ों तथा रोगियों को मारा जा रहा है। हर प्रकार के युद्ध के नियमों को इस तथाकथित सभ्य दुनिया ने पीछे छाड दिया है। अल्लाह तआला मुस्लिम देशों को भी बुद्धि दे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने 72, 73 साल पहले यह चेतावनी दी थी कि मुसलमानों को एक होना चाहिए, वे निर्णय करें कि यदि एक न हुए तो एक एक करके अपने आपको नष्ट करना है, अथवा एक जुट होकर अपना एक अस्तित्व स्थापित रखना है एवं शेष बचना है। काश, कि अब भी ये लोग इस बात को समझ जाएँ और एक हो जाएँ। स्थिति तो यह है, मुझे किसी ने बताया कि उमरे पर जाने वालों को कहा जा रहा है कि वहाँ जाकर फ़लिस्तीन या इसराईल के युद्ध के बारे में कोई बात नहीं करनी। वहाँ की सरकार वीज़ा देते हुए यह निर्देश देती है। यदि यह सच है तो मुस्लिम शासन की ओर से अत्यंत कायरता की अभिव्यक्ति है। अतएव उमरे की इबादत का हक़ अदा करना चाहिए, इसके बीच तो किसी प्रकार की ऐसी बातें नहीं होंगी, परन्तु पीड़ित फ़लिस्तीनियों के लिए दुआ तो वहाँ अवश्य करनी चाहिए, और जाने वाले काश, इन दुआओं को भी याद रखें।

आजकल मुस्लिम देश भी आवाज़ उठाते हैं तो बड़ी दुर्बल आवाज़ है, कुछ आवाज़ें उठी हैं, इससे अधिक ज़ोरदार आवाज़ तो कुछ ग़ैर मुस्लिम लोग तथा राजनेताओं एवं शासनों ने उठाई हैं। अल्लाह तआला मुसलमानों में भी साहस एवं विवेक पैदा फ़रमाए। यू.एन. के सैकरेट्री जर्नल भी अच्छा बोलते हैं, आजकल तो वे अधिक अच्छा बोल रहे हैं परन्तु लगता है कि उनकी आवाज़ का कोई महत्त्व नहीं है, लगता है कि यदि यह युद्ध अधिक फैल गया तथा विश्व युद्ध की अवस्था पैदा हो गई तो इसकी समाप्ति के बाद यू.एन. भी समाप्त हो जाएगी। अल्लाह तआला दुनिया को बुद्धि प्रदान करे। लगता है कि अब दुनिया अपने विनाश को निकट से निकट लेकर आ रही है तथा इस विनाश के बाद जो लोग बचेंगे उन्हें अल्लाह तआला बुद्धि दे तथा व ख़ुदा तआला की ओर ध्यान लगाएँ, उसकी ओर लौट कर आएँ। अतएव हमें इस संदर्भ में बहुत दुआएँ करनी चाहिएँ, अल्लाह तआला दुनिया पर दया करे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔